उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

23, एलनगंज, प्रयागराज–211002

पाठ्यक्रम–प्रवक्ता (पी0जी0टी0)

संगीत गायन (22)

SARKARIRESULT.COM

शास्त्रीय शब्दावली की परिभाषा एवं व्याख्याः–

स्वर, शुद्ध, विकृत स्वरों की व्याख्या, सप्तक, नाद, उसके भेद (आहत और अनाहत), नाद की विशेषताएँः– तीव्रता (Magnitude), तारता (Pitch), गुण (Timber), श्रुतियाँ, शुद्ध स्वरों की आन्दोलन संख्या, वीणा के तार पर श्री निवास द्वारा शुद्ध स्वरों की स्थापना, आलाप, तान एवं तानों के प्रकार। कण, मुर्की, कम्पन, मीड़, गमक और उसके प्रकार, आरोह, अवरोह, वादी, सम्वादी, अनुवादी, विवादी, ग्रह, अंश, न्यास, अल्पत्व, बहुत्व, पूर्वराग, उत्तर राग, संधिप्रकाश राग, आश्रय राग, परमेल प्रवेशक राग, तिरोभाव, आविर्भाव, ग्राम और उसके प्रकार।

हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत के स्वरों, रागों तथा संगीत पद्धतियों की तुलना। भातखण्डे, विष्णुदिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों की तुलना। तानपुरे के विभिन्न अंगों का ज्ञान, तानपुरा मिलाने की विधि का ज्ञान तथा उसके निकलने वाले सहायक नादों की जानकारी। हिन्दुस्तानी संगीत का इतिहास, काल विभाजन सहित। विभिन्न गायन शैलियों यथा–ध्रुपद, धमार, ख्याल (विलम्बित एवं द्रुत), टप्पा, ठुमरी, तराना, सरगम, लक्षणगीत, भजन त्रिवट, चतुरंग, रागमाला, होली आदि की विस्तृत व्याख्या। ध्रुपद एवं धमार की लयकारियों का लिखित ज्ञान। वायस कल्चर (Voice-Culture) के अन्तर्गत कण्ठ सम्बन्धी प्रक्रिया का ज्ञान, काकु भेद सम्बन्धी तत्व इनके सुप्रभाव तथा कुप्रभाव (ध्वनीय प्रदूषण) का विश्लेषण। राग–रागिनी वर्गीकरण का विस्तार पूर्वक वर्णन।

संगीत में 'घराना' शब्द की व्याख्या, वर्तमान संदर्भ में विभिन्न घरानों की स्थिति का विश्लेषण, घरानों की विशेषताएँ (ग्वालियर घराना, जयपुर घराना, इन्दौर घराना, आगरा घराना, किराना घराना, पटियाला घराना) सभी घरानों के संदर्भ में। प्रत्येक घराने के प्रतिनिधि कलाकार की विशेषताएँ। पं0 भातखण्डे, विष्णु दिगम्बर, शारंगदेव, तानसेन, अमीर खुसरो का विस्तृत जीवन परिचय तथा भारतीय संगीत में उनके योगदान की व्याख्या। भारतीय संगीत के शास्त्रकारों पं0 लोचन, पं0 शारंगदेव, भरत, मतंग, अहोबल, सोमनाथ के कृतित्व का विवेचन।

राग मालकौंस, जौनपुरी, मारू विहाग, पूरिया धनाश्री, वृन्दाबनी सारंग, केदार, मियां मल्हार, पूर्वी, मधुवन्ती एवं गुर्जरी तोड़ी का विस्तृत परिचय इनकी बंदिशों को लिपिबद्ध करना,

छोटे स्वर समुदायों द्वारा राग पहचानना, इनके बढ़त की योग्यता। पाठ्यक्रम में लिखित रागों में तुलना तथा बंदिशों में आलाप, तान, बोलतान सहित स्वर लिपिबद्ध करना। ध्रुपद, धमार, गायन शैलियों को स्वर लिपि सहित दुगुन, तिगुन, चौगुन, छःगुन की लयकारियों में लिखना।

रूपक ताल, एकताल, झपताल, सूलताल, चारताल, धमार गजझम्पा, ब्रह्मताल, तीनताल, तिलवाड़ाताल, दीपचन्दी ताल, झूमरा तालों का परिचय ठेका दुगुन, तिगुन, चौगुन के अतिरिक्त 2/3, 3/2, 5/4 एवं 7/4 की लयकारियों में लिपिबद्ध करना।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य–कला–

(क) भारतनाट्यम

(ख) कथकली

(ग) कथक

(घ) मणिपुरी

पाश्चात्य् संगीत का सामान्य अध्ययन–

(1) स्टाफ नोटेसन सिस्टम,

(2) हार्मनी एवं मेलॉडी

(3) पाश्चात्य् सप्तक– (i) डायटेनिक स्केल

(ii) नेचुरल स्केल

(iii) पाइथागोरस स्केल

SARKARIRESULT.COM